Krantidoot-Jhansi_Files



May 29, 2022
क्रांतिदूत - झाँसी फाइल्स (#jhansi_files)
लेखक - डॉ. मनीष श्रीवास्तव
(ट्विटर पर @Shrimaan)
प्रकाशक - सर्व भाषा ट्रस्ट , नई दिल्ली

अपनी पहली पुस्तक समीक्षा लिखते हुए एक तरफ डर भी है तो दूसरी तरफ गर्व की अनुभूति भी। आज़ाद की ये पंक्तियाँ - “Don't see others doing better than you, beat your own records everyday, because success is a fight between you and yourself.” याद आते ही डर छूमंतर हो जाता है क्योंकि मुक़ाबला तो खुद से ही है और अपने महान बलिदानी पूर्वजों पर गर्व होना स्वाभाविक है।

117 पन्नों की ये पुस्तक पाठक को भारत की आज़ादी के उन सभी जाने-अन्जाने क्रांतिवीरों से मिलवाती है जिन्होंने मातृभूमि के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर दिए, बिना किसी अपेक्षा के कि आने वाला कल उन्हें याद रखेगा भी या नहीं। और जैसा कि होता आया है , ना तो आने वाले कल ने उन्हें याद किया और ना ही कोई ऐसी व्यवस्था की कि आने वाली पीढ़ियाँ अपने सही नायकों का चुनाव कर सकें। सरल भाषा के द्वारा लेखक का इसी दिशा में यह एक सफल प्रयास है।

10 पुस्तकों के गुलदस्ते की शोभा बढ़ाता झाँसी का ये गुलाब पाठकों पर अपनी सरल भाषा , बोलचाल की शैली और क्रांतिवीरों की महानता की कस्तूरी महक छोड़ जाता है।

बिस्मिल ,अशफ़ाक़, आज़ाद से शुरू हो कहानी अचानक झाँसी पहुँचती है जहाँ पाठकों का परिचय होता है कई अन्जाने क्रांतिवीरों -सदाशिव राव मलकापुरकर , भगवान दास माहौर , विश्वनाथ गंगाधर वैशम्पायन, महाराजा खलक सिंह और इनको राह दिखाते क्रांतिदूत मास्टर रुद्रनारायण जी से।

मूलतः यह पुस्तक आज़ादी के मतवाले आज़ाद की झाँसी और सातार मंदिर के वनवास की कहानी है जहाँ वह छद्म रूप में मास्टर जी की कुशल रणनीति में आज़ादी की लौ जलाए रखते हैं।

मनीष जी ने बहुत से रोचक प्रसंगों जैसे कि आज़ाद का काशी के मठ में रहना, क्रांतिकारियों का भाई जैसा प्यार और दोस्तों जैसी नोकझोंक , आज़ाद का अडिग ब्रह्मचर्य व्रत का मजेदार किस्सा इत्यादि को बड़ी ही मासूमियत , सरलता और जिम्मेदारी से निभाया है।

छोटी-मोटी त्रुटियों को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है लेकिन मनीष जी से अनुरोध है कि अनुक्रम में पृष्ठ संख्या की गलती को अगले संस्करणों/भागों में ना दोहराया जाए।

लेखक की सफलता इस बात से भी तय होती है कि पाठक पुस्तक पढ़ने के बाद उनकी अगली कृति की प्रतीक्षा करेंगे या नहीं और मुझे ये पूर्णतः विश्वास है कि जो भी इस पुस्तक को पढ़ेगा वो अपने ज्ञान और जीवन को क्रांतिदूतों के गुलदस्ते के बाकी 9 फूलों की ख़ुश्बू से जरूर महकाना चाहेगा।

~ @NafsSays